पंचम अध्याय

''औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन''

पंचम अध्याय

"औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रस्तावना :

उपन्यास आधुनिक काल की देन है। उपन्यास को पढनीय बनाने के लिए उसमें कलात्मकता तथा प्रयोजन परकता का होना अनिवार्य है। उपन्यास को उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए भी कलात्मकता का होना अनिवार्य है। विवेच्य उपन्यासों की कलात्मकता का अध्ययन जिन तत्वों के आधारपर किया जा सकता है वे इस प्रकार हैं -

5.1 कथावस्तु :

औपन्यासिक कला में कथावस्तु को प्रमुख तत्व के रूप में मान गया है। कथावस्तु उपन्यास के प्राण होती है। उपन्यास में चित्रित घटनाँए कथानक की प्राण होती है। उपन्यास में घटनाओं का व्यवस्थित समन्वय होना चाहिए। रचनाकार कथावस्तु को प्रभावशाली बनाने के लिए उनमें विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता है। उपन्यास कला की सफलता मुख्यत: कथानक की क्रमबद्धता पर आधारित होता है। कथानक में वस्तुत: रोचकता, संभाव्यता एवं मौलिकता होनी चाहिए। कथानक ही वह वस्तु होती है जिस पर उपन्यास का भवन खड़ा होता है। कथानक के बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं - "कथानक उपन्यास के तत्वों मे सर्वप्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उपन्यास का कथनाक ही वह तत्व है, जिससे केंद्रिय रुप में उसके सभी अन्य तत्व बद्ध रहते हैं। स्थूल रुप से कथानक को किसी उपन्यास में आयी हुई सभी घटनाओं का क्रम बद्ध लेखा कहा जा सकता है। इसलिए भी उपन्यास के अन्य तत्वों में उसकी प्रधानता रहती है।"[1] अत: कहना सही होगा कि कथानक उपन्यास की आत्मा है।

5.1.1 कथावस्तु : पहला गिरमिटिया -

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' मोहनदास के सन् 1893 से सन् 1914

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृष्ठ-74

तक के दक्षिण अफ्रीका जीवनपर केंद्रीत उपन्यास है। इसमें पाँच साल के गिरमिट पर गए भारतीय गिरमिटियों की अन्याय, अत्याचार तथा शोषण से पीड़ित दर्दनाक जीवन की कथा अंकित है। इसमें मोहनदास संघर्ष के दूवारा गिरमिटियों को अपने हक्क तथा अधिकार वापस दिलाने की संघर्ष गाथा है। गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास अपने आठ वर्षों के गंभीर अन्वेषण के बाद लिखा। उपन्यास लिखने के दौरान उन्होंने इंग्लैड, मारिशस, दक्षिण अफ्रीका आदि विभिन्न देशों की यात्रा की। गांधी जी के जीवन के तीन पक्ष है - 'मोहनिया पक्ष', 'मोहनदास पक्ष', 'महात्मा गांधी पक्ष' इसमें से मोहनदास पक्ष पर ही आधारित यह उपन्यास है। इस उपन्यास में मोहनदास से अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण महात्मा गांधी बनने की गाथा है।

उपन्यास का प्रारंभ भारतीय गिरमिटियों को पाँच साल के एग्रीमेंटपर (गिरमिट पर) ले जानेवाले जहाज से होता है। उपन्यास प्रारंभ में ही मोहनदास का वकालत में केस न मिलना, वकालत में बेईमानी तथा असफलता एवं भ्रष्ट न्याय व्यवस्था के कारण मोहनदास एक साल के गिरमिट पर दादा अब्दुला के केस की पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना तय करते हैं। इस उपन्यास में मुख्य कथा मोहनदास और नायिका कस्तूर से संबंधित है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में कई अंतर्कथाएँ जुड़ी हुई है। जिसमें दादा अब्दुला की कथा, हाजी सेठ की कथा, तैयब सेठ की कथा, उका की कथा, मि.बेकर की कथा, तैय्यब सेठ की कथा, पोलक और मिली की कथा, जनरल स्मट्स की कथा, मदनजीत की कथा, शेख मेहताब की कथा, जॉन्स्टन की कथा, आदि अनेक कथाएँ मुख्य कथा को विकसित कराने तथा पात्रों का चरित्रोद्घाटन करने में सहाय्यता करती है।

उपन्यास के मध्य में मुख्यत: मोहनदास की कोर्ट रुमवाली घटना, मोहनदास को ट्रेन में दो गोरे अधिकारियों दूवारा पिटना, 'ग्रैण्ड नेशनल होटल' में अश्वेत होने के कारण प्रवेश न मिलना, पार्डीफोक में कोचबॉक्स में एक गोरे अधिकारी दूवारा पिटना, गिरमिटियों की पशु से बदतर अपमानित जिंदगी, ट्रांसवाल में एशियाटिक कानून लागू होना, गिरमिटियों की दयनीय जिंदगी, स्त्रीयों तथा बच्चों की दयनीय जिंदगी, 'फीनिक्स' तथा 'टॉलस्टाय' आश्रम की स्थापना, गिरमिटियों की एकता के लिए 'नेशनल कॉंग्रेस की स्थापना' बच्चों की पढ़ाई के

लिए स्कूल का निर्माण, बोअर युद्ध, गिरमिटियों के हक्क के लिए मोहनदास, कस्तूबा का तथा अनेक गिरमिटियों का जेल जाना, आदि प्रमुख घटनाएँ हैं।

उपन्यास के अंत में 'सत्याग्रह' के अस्त्र द्वारा तथा गिरमिटियों की एकता तथा संघर्ष के द्वारा छिने गए अधिकार वापिस दिलाना तथा दक्षिण अफ्रीका सरकार द्वारा गिरमिटियों की माँगे पुरी करना, मोहनदास के अच्छे गुणों द्वारा उनका महात्मा बनना, भारत लौटना आदि के साथ उपन्यास का अंत सुखद होता है।

'पहला गिरमिटिया' एक रोचक तथा एक महान चरित्रप्रधान कृति है। लेकिन इसमें इसमें लंबे-लंबे संवाद, वर्णनात्मकता, 904 पृष्ठों का बृहदाकार, घटनाओं की अनावश्यक बाढ़ आदि अनेक कारणों से उपन्यास पढ़ते समय पाठक ऊब जाते हैं। सबसे बड़ी बात 904 पृष्ठों का उपन्यास पढ़ने के लिए पाठक साहस जुटा नहीं पाते यह उपन्यास बहुत बड़ा दिखता है। इस उपन्यास में अनावश्यक वर्णनात्मकता, अनावश्यक प्रसंगों को काँट दे तो एक सफल, उत्कृष्ठ कृति है इसमें दो राय नहीं।

5.1.2 कथावस्तु : महानायक -

विश्वास पाटील का 'महानायक' सुभाषबाबू के चरित्र केंद्रित ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में सुभाषबाबू के राष्ट्रोन्मुख, कर्तव्यवादी, जनवादी, त्यागी, स्वाभिमानी, देशप्रेमी, देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की बाजी लगानेवाले महान नायक की चरित्र गाथा है। प्रस्तुत उपन्यास लिखने के दौरान विश्वास पाटील जी ने ब्रह्मदेश, थायलैंड, फ्रान्स, इंग्लैड, इटली आदि अनेक देशों की यात्रा की। इस उपन्यास का अब तक हिंदी, गुजराती, कन्नड, राजस्थानी, मल्यालम्, बंगाली, तामिल आदि ग्यारह भाषाओं में अनुवाद संपन्न हुआ है। यह सुभाषबाबू के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक चरित्र-प्रधान उपन्यास है।

उपन्यास का प्रारंभ दिल्ली के लाल किले के वैभव, उस किले का पूर्वेतिहास, लाल किले के जय-पराजय, मान-अपमान के प्रसंग, हिंदुस्तान का ऱ्हदय जिसके कारण अनेक नौजवानों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। आदि अनेक लाल किले से संबंधित

घटनाओं से होता है। इस उपन्यास में सुभाषबाबू के व्यक्तित्व की ही मुख्य कथा है उसके साथ-साथ अन्य अनेक अंतर्कथांएँ जुड़ी हुई दिखाई देती है जिसमें सुभाषबाबू और एमिली की कथा, जवाहरलाल नेहरु की कथा, सुभाषबाबू के काँग्रेस अध्यक्ष बनने की कथा, महात्मा गांधी की कथा, सुभाषबाबू और हिटलर की कथा, डॉ. लक्ष्मी सेहगल की कथा, विठ्ठलभाई पटेल की कथा आदि अनेक अंतर्कथाएँ दिखाई देती है। मुख्य कथा को विकसित करने तथा पात्रों का चरित्रोदूघाटन करने में ये कथाएँ सहायता करती है।

उपन्यास के मध्य मे सुभाषबाबू का आय.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण होना, राष्टसेवा के लिए आय.सी.एस. से त्यागपत्र, सुभाषबाबू का गांधी जी से मिलना तथा देश के बारे में चर्चा करना, सुभाषाबाबू काँग्रेस अध्यक्ष बनना, गांधी जी से मतभेद निर्माण होना, सुभाषबाबू का काँग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना, जर्मन में हिटलर से मिलना, हिटलर से मदद न मिलने पर सुभाषबाबू का पणडुब्बियों दूवारा जपान तक की खतरनाक यात्रा करना जपान मंत्री तेजों से भेंट, अँग्रेजों के विरूदूध लडने तथा 'आजाद हिंद फौज' निर्माण में जपान दूवारा सहायता मिलना, एमिली से विवाह करना, जपान में 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना, सतत युदूध अमेरिका दूवारा हिरोशिमा और नागासाकी पर बम वर्षा करना, जपान का आत्मसमर्पण, रशिया जाते समय हवाई जहाज दुर्घटना में सुभाषबाबू की मृत्यु आदि घटनाएँ प्रमुख हैं।

उपन्यास के अंत में सुभाषबाबू की हवाई जहाज दुर्घटना में मृत्यु होना। उपन्यास का अंत दुःखद है। जिस देशप्रेमी दूवारा भारत को आजाद करने के लिए अपने प्राणों की पर्वा न करते हुए लड़ना तथा अंत में लड़ते-लड़ते इसकी मृत्यु होना निश्चय ही उपन्यास का अंत दर्दनाक, हृदयग्राही दिखाई देता है।

5.2 पात्र तथा चरित्र-चित्रण :

औपन्यासिक कला की दृष्टि से अध्ययन करते वक्त पात्र चरित्र-चित्रण का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पात्रों के माध्यम से ही उपन्यासकार अपनी जीवनानुभूति को प्रस्तुत करता है -

5.2.1 पात्र तथा चरित्र-चित्रण : पहला गिरमिटिया -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र, गौण पात्र तथा सहाय्यक पात्रों का चित्रण मिलता है। इस उपन्यास में पात्रों की संख्या सौ से भी अधिक दिखाई देती है। इस उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में मोहनदास और कस्तूर दिखाई देते हैं। इन दोन प्रमुख पात्रों को छोडकर अन्य गौण पात्र के रूप में उका, मि. हेनरी पोलक, मिस डिक, दादा अब्दुल्ला, जावेरी भाई, तैय्यब सेठ, मि. बेकर, मि. जॉन्स्टन,मि. कैप्टन ल्यूकस, मगनलाल, शेख मेहताब, हरिलाल, मणिलाल, जेकी, मि. मेसन, प्रोफेसर गोखले, मि. रूस्तम, जनरल स्मटस्, मि. कैलेनबैक, पारसी रुस्तम, आदम जी मिया आदि अनेक गौण पात्र के रुप में पात्र दिखाई देते हैं।

5.2.1.1 मोहनदास का चरित्र-चित्रण :-

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के प्रमुख पात्र के रूप में चित्रित मोहनदास की चरित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. राष्ट्रपिता का नहीं, सामान्य व्यक्ति के रूप में चित्रण :-

गिरिराज किशोर ने इस उपन्यास में मोहनदास को केंद्रीय पात्र के रूप में चित्रित किया है। मोहनदास के जीवन के तीन पक्ष है - 'मोहनिया पक्ष', 'मोहनदास पक्ष' तीसरा 'महात्मा गांधी पक्ष' का चित्रण किया है। इसमें लेखक ने मोहनदास से गांधी में रुंपातरित होने की प्रक्रिया को अंकित किया है। महात्मा गांधी जी भले ही हमारे देश की स्वाधीनता के संघर्ष पुरुष हो लेकिन दक्षिण अफ्रीका में बीता उनका जीवन आम आदमी की संवेदना और अनुभवों के अधिक निकट था। इसलिए कहना सही होगा कि उन्होंने यह उपन्यास महात्मा गांधी पर न लिखकर मोहनदास पर लिखा है। इस बारे में स्वयं लेखक लिखते हैं - " आगे आनेवाली पीढ़ी को मोहनदास की ज्यादा जरुरत है जिससे वह जान सके मोहनदास महात्मा गांधी कैसे बना।"[1] कहना गलत नहीं होगा कि इसमें राष्ट्रपिता का नहीं, सामान्य व्यक्ति के रूप में मोहनदास का चित्रण दिखाई देता है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 7

2. रोजी-रोटी के लिए दक्षिण अफ्रीका प्रस्थान :-

मोहनदास सामान्य व्यक्ति है न कि राष्ट्रपिता। मोहनदास अपने पत्नी के जेवर बेचकर लन्दन से बार-एट-लॉ की डीग्री लेकर राजकोट लौट आते हैं राजकोट में वकालत की प्रैक्टिस करते समय ईमानदार होने के कारण उन्हें बेईमानी देखकर तकलीफ होती थी। किसानों से टैक्स लिया जाता था। भ्रष्ट न्याय व्यवस्था तथा बेईमानी न सहने के कारण वे पैसा कमाने के लिए तथा रोजी-रोटी के लिए दक्षिण अफ्रीका में दादा अब्दुला के कैस की पैरवी के लिए एक साल के गिरमिट पर जाना तय करते है। अत: वे निर्धनता के कारण तथा रोजी-रोटी की समस्या मिटाने के लिए एक साल के गिरमिट पर दक्षिण अफ्रीका जाते हैं।

3. संघर्षशील जीवन :-

दक्षिण अफ्रीका मे जाने के बाद मोहनदास दादा अब्दुला के साथ डरबन में कोर्ट रुम देखने जाते हैं। पगड़ी पहनने के मैजिस्ट्रेट उन्हें पगड़ी उतारने को कहते है वे पगड़ी न उतारकर वे बाहर जाना पसंद करते हैं। रेल में फर्स्ट क्लास का टिकट होते हुए भी मोहनदास को अश्वेत होने के कारण दो गोरे अधिकारी पिटते है। पार्डीफोक मे एक गोरा अधिकारी मोहनदास को उसके पैरों के पास बैठने को कहते हैं तब मोहनदास उसे संबोधित करते हुए कहते हैं - ''मैं तुम्हारे पैरों के पास बैठने को तैयार नहीं .... अगर तुम यहाँ बैठना चाहतो हो तो मैं अंदर जा सकता हूँ .... वहाँ तुम्हारी सीट खाली है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि मोहनदास उसके पैरों के पास बैठने से इन्कार करते है। गोरे भारतीयों से नौंकरों जैसा बर्ताव करते थे। तब वह गोरा अधिकारी मोहनदास को पिटता है। 'ग्रैण्ड नेशनल होटल' में जगह होते हुए भी अश्वेत होने के कारण रहने के लिए प्रवेश नहीं दिया जाता। मोहनदास को दक्षिण अफ्रीका जाने से लेकर भारत लौटने तक संघर्ष करना पड़ता है।

4. गिरमिटियों में एकता की हिमायत करनेवाले :-

दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटियों की अन्याय-अत्याचार तथा शोषण से पीड़ित बदत्तर जिंदगी देखकर मोहनदास उनमें एकता स्थापित कर अन्याय-अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करने के लिए तैयार होते हैं। मोहनदास गिरमिटियों में एकता के बारे में संबोधित करते हुए

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 118

कहते हैं - "मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मेरा एक-एक पल संगठन के काम में लगेगा।"[1] उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि गिरमिटियों की दयनीय स्थिति का सुधार के लिए वे अपना सब कुछ त्यागकर उनकी मदद के लिए हर पल तैयार रहते है। मोहनदास उनकी समस्याओं को वाणी देने के लिए 'इंडियन ओपीनियन' तथा उनके संगठन के लिए सन 1894 को 'नेटाल इंडियन काँग्रेस' की स्थापना करते हैं।

5. शिक्षा तथा मातृभाषा के प्रचार के प्रति सजग :-

मोहनदास गिरमिटियों की स्थिति सुधारने हेतु पहले 'फीनिक्स आश्रम' तथा बाद में 'टॉलस्टाय' आश्रम बनाते हैं। वे गिरमिटियों के बच्चों को अंधकार से बहार निकालने के लिए शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसी कारण वे 'टॉलस्टाय' आश्रम में स्कूल की शुरुआत करते हैं। उनका मानना है कि गिरमिटियों से अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के प्रति सजग करना है तो उनमें शिक्षा का प्रसार होना महत्त्वपूर्ण है। वे बच्चों की पढ़ाई में मातृभाषा को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। हेनरी पोलक मोहनदास को उनके बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने के बात कहता है तब मोहनदास उसे संबोधित करते हुए कहते हैं - " जो माँ-बाप अपने बच्चों को अंग्रेजी में सोचना और बात करना सिखाते हैं, वे बच्चों के भी शत्रु हैं और अपने देश के भी।"[2] उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि मोहनदास राष्ट्र तथा आत्मोन्नति के लिए मातृभाषा को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं।

6. सत्याग्रह के आग्रही :-

मोहनदास किसी भी कठिन-से-कठिन कार्य को पूर्ण करने के लिए सत्याग्रह को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। दक्षिण अफ्रीकन सरकार ट्रांसवाल में रहने के लिए एशियाटिक कानून लागू करती है। मोहनदास सरकार के विरूद्ध लढ़ने के लिए अहिंसा रूपी शस्त्र सत्याग्रह को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। वे इस संबंध वे मगनलाल को संबोधित करते हुए कहते हैं - " हमारी लड़ाई का नाम 'सत्याग्रह' है। सत्याग्रह ही हमारा मार्ग निर्देशक होगा, वही इसी काले कानून से लोहा लेगा, जब भी विचार और अस्मिता का संकट आएगा 'सत्याग्रह' ही हमारा अस्त्र होगा, सत्याग्रह ही हमारा ध्येय होगा, सत्याग्रह वह मन्त्र होगा जिससे हम सारी व्याधियों को

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 163
2. वही, पृष्ठ - 614

जीता सकेंगे।''[1] कहना गलत नहीं होगा कि मोहनदास सत्याग्रह को ही लड़ाई का प्रमुख अस्त्र मानते हैं। और एशियाटिक कानून के खिलाफ न्याय की लड़ाई लड़ते हैं।

7. अवैध यौन-संबंध के विरोधी :-

मोहनदास हमेशा अवैध यौन संबंध का विरोध करते हैं। 'टॉलस्टाय आश्रम' में एक स्कूल के लड़के दूवारा लड़की के बालो को अजीब ढंग से छूने के कारण वे लड़की के बाल काट देते हैं जिसके कारण वासना की निर्मिति हुई। उस लड़के को आश्रम से निकाल देते हैं। 'फीनिक्स' में मणिलाल और जेकी के बीच के यौन-संबंध की बात मालूम होती है, तब वे स्वयं को भी गुनहगार मानते हैं और भी उपवास भी करते हैं। मोहनदास हरी को फिर कभी 'फीनिक्स' नहीं जाने देते क्योंकि वहाँ जेकी रहती थी। इस संबंध में वे कस्तूर से कहते हैं - ''मैंने मणि को फीनिक्स नहीं भेजा वहाँ जेकी थी।''[2] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि मोहनदास यौन-संबंध के विरोधी थे।

5.2.1.2 कस्तूर का चरित्र-चित्रण :-

कस्तूर उपन्यास की और नायक मोहनदास की पत्नी है। वह अनपढ़ है। वह अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे में सदा सतर्क रहती है। वे भारतीय परंपरावादी नारी है। वह अपने पति की पढ़ाई के लिए (बार-ए-लॉ) के लिए अपने गहने बेचती है। वह स्पष्टवादी है। मोहनदास जब भारत लौटने के लिए निकलते हैं तब उन्हें उपहार के रूप में लोंगो गहने, सोना आदि देते है। कस्तूर सोने की लालसी है। मोहनदास लोगों से मिले हुए गहने लेने से इन्कार करती है तब वह उन्हें संबोधित करते हुए कहती है - '' कल मेरी बहुएँ आएँगी, वे क्या पहनेंगी? यहाँ क्या रखा है .... इतने प्रेम से दिये गये इन उपहारों को मैं हरगिज वापिस नहीं करूँगी।''[3] स्पष्ट है कि वह स्पष्टवादी तथा गहने की लालची है। कस्तूरबा का स्वभाव नरम है फिर भी वह हृदय से कोमल है। कस्तूरबा का व्यक्तित्व सीधा, सरल, दूसरों के दु:ख से दु:खी होना, दयालु, स्पष्ट वादी, दूरदर्शी, हृदय से कोमल आदि उसकी चारित्रिक विशेषताएँ देखी जाती है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 649
2. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 891
3. वही, पृष्ठ - 490

5.2.2 पात्र तथा चरित्र-चित्रण : महानायक -

विश्वास पाटील ने 'महानायक' उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र, गौण, पात्र तथा सहायक पात्रों का चित्रण हुआ परिचय दिखाई देता है। इस उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र के रूप में सुभाषबाबू तथा एमिली का तथा गौण या सहाय्यक पात्र के रूप में मेजदा, भाई शरद, विभावती, पिता जानकीनाथ, जवाहरलाल नेहरु, महात्मा गांधी जी, कृपलानी, हिटलर, जपान प्रधानमंत्री तेजो, दिलिप, शहनवाज, कर्नल लक्ष्मी, बॅ. यल्लाप्पा, शाहनवाज, विठ्ठलभाई पटेल, कृपालानी, कस्तुरबा, मोहिनी, माँ जानकी, शिडोई आदि अनेक गौण पात्रों का चित्रण गौण रूप में दिखाई देता है। 'महानायक' उपन्यास में गौण पात्रों की संख्या सौ के आसपास है।

5.2.2.1 सुभाषबाबू का चरित्र-चित्रण :-

'महानायक' उपन्यास के प्रमुख पात्र सुभाषबाबू की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित :-

सुभाषबाबू बचपन से ही स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित दिखाई देते हैं। वे स्वामी विवेकानंद की किताबें पढ़ने के लिए उड़िया बाजर के घोष नामक अपने रिश्तेदार के यहाँ जाते थे। वहाँ वे विवेकानंद जी की किताबे पढ़ते थे। इस संबंध में स्वयं विश्वास पाटील लिखते है - ''स्वामीजींचे शब्द वाचतांना त्याच्या नसनसांतून विजेच्या लहरीच जणू कंप पावू लागल्या.''[1] (स्वामीजी के विचारों को पढ़ते हुए उसकी नस-नस में विदूयुत धारा सी प्रवाहित होने लगी और उसका शरीर प्राकंपित हो उठा) उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि बचपन से ही उन पर स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है।

2. मेधावी व्यक्तित्व :-

सुभाषबाबू अपनी शालेय अवस्था से ही एक प्रबुद्‌ध छात्र के रूप में हमारे सामने आते है। सुभाषबाबू बचपन से ही प्रथम, दूवितीय क्रमांक से उत्तीर्ण होते थे। स्नातक की परीक्षा प्रथम तथा कलकत्ता विश्वविदूयालय में दूवितीय स्थान प्राप्त करते हैं। सुभाषबाबू आय.सी.एस. की परीक्षा के लिए इंग्लैंड जाते हैं और आय.सी.एस. जैसी कठिण परीक्षा चौथे

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 26

क्रमांक से उत्तीर्ण हो जाते हैं। सुभाषबाबू की इस यशस्वी शैक्षिणिक यात्रा से उनके तेज बुदृधित्व का परिचय मिलता है। उनके दृवारा भारत की स्वतंत्रता के लिए चलाए गए विविध उपक्रम तथा उनके दृवारा स्थापित 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना उनके मेधावी व्यक्तित्व के दी उदाहरण है।

3. क्रांतिकारी एवं विद्रोही :-

सुभाषबाबू के विचार उनके बाल्यकाल से ही विद्रोही दिखाई देते हैं। कॉलेजिएट स्कूल में श्रीवास्तव सर इंग्लैड के राणी की प्रार्थना कहने के लिए कहते हैं। सुभाषबाबू का मन इंग्लैड की रानी प्रार्थना कहने के लिए तैयार नहीं होता वे उलटा श्रीवास्तव सर को गरजकर कहते हैं - "इंग्लडची राणी कोण आमची ? धर्मगुरु की प्रेषित ? की समाजसेविका ? कशासाठी गाऊ प्रार्थना ?"[1] (इंग्लैंड की रानी क्या लगती है मेरी? धर्मगुरु या पैगम्बर ? या समाजसेविका? किसलिए गाऊँ मैं प्रार्थना ?) स्पष्ट है कि उनके विचार विद्रोही दिखाई देते हैं।

सुभाषबाबू के विचार उनके बाल्यकाल से ही क्रांतिकारी दिखाई देते हैं। सुभाषबाबू बचपन से ही क्रांतिकारी युवकों में घुमते-फिरते थे। बचपन से ही उनमें क्रांतिकारी विचार होने के कारण सुभाषबाबू के माँ-बाप भविष्य को लेकर चिंतित थे। सुभाषबाबू नवयुवकों को संबोधि त करते हुए कहते हैं - " तुम्ही मला रक्त दया ! मी तुम्हाला स्वातंत्र्य देतो !"[2] (तुम मुझे खुन दो ! मैं तुम्हें आजादी दूँगा !) उक्त कथन से उनके क्रांतिकारी विचार परिलक्षित होते हैं। सुभाषबाबू के विचारों में उनके बचपन से ही अपने देश को स्वातंत्र्य बनाने की प्रबल महत्त्वकांक्षा जागृत हो चुकी थी। अत: उनके विचार क्रांतिकारी और अँग्रेजी शासन के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले दिखाई देते हैं। जो नई पीढ़ी की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होते है।

4. राष्ट्र के लिए त्यागी :-

सुभाषबाबू भारत को पारतंत्र्य की बेड़ियों से मुक्त करना चाहते हैं। सुभाषबाबू बचपन से ही अपने देश के लिए कुछ करने की आस रखते थे। वे आय.सी.एस. की परीक्षा के लिए इंग्लैंड जाना नहीं चाहते थे लेकिन अपनी माँ-बाप की इच्छा के खातिर वे इंग्लैंड जाते हैं।

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 28
2. वही, पृष्ठ - 428

वहाँ आय.सी.एस. की परीक्षा चौथे क्रमांक से उत्तीर्ण होते हैं। देश की स्वतंत्रता के विचार ने उन्हें इतना प्रभावित किया था कि आय.सी.एस. जैसी नौकरी से उन्होंने केवल इसलिए त्यागपत्र दिया कि उन्हें अँग्रेजों के शासन में नौकरी न करनी पड़े। इस बारे में सुभाषबाबू अपने भाई सतीशदा से कहते हैं - " मातृभूमिच्या पायातल्या बेड्या तोडणं हे माझं जीवनध्येय आहे. सनदी नौकरीच्या बेड्या पायात बांधून मला स्वत:हून त्या खोड्यात फसायचं नाही."[1] (मातृभूमि के पाँवों की बेडियाँ तोड़ना मेरे जीवन का प्रथम लक्ष्य है। सरकारी नौकरी की बेडी में बँधकर मैं स्वयं को इस फन्दे में फँसानेवाला नहीं हूँ।) उक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि देश को स्वतंत्र कराना ही सुभाषबाबू का अंतिम ध्येय था और इस ध्येय पूर्ति के लिए अपनी आय.सी.एस. जैसी बहुमूल्य समझी जानेवाली नौकरी को भी उन्होंने त्याग किया।

5. **कुशल वक्ता :-**

सुभाषबाब के वक्तृत्व में वह क्षमता थी कि वे कहीं भी जाते थे और अपनी वाणी से सबको मंत्रमुग्ध करते थे। उनके सफल वक्तृत्व के कारण ही अनेक हजारों युवक उनकी ओर आकृष्ट थे। वे युद्ध के लिए लड़कियों तथा महिलाओं को भी प्रेरित करते थे। क्वालालंपूर पडांग मैदानपर वहाँ उपस्थित महिलाओं तथा लड़कियों से वे कहते हैं - "चला, माझ्या भगिनींनो, आपल्या हातामध्ये बंदुका झेला. दिल्लीकडं चला ऽऽ. सीमेवर तुमच्या नाजूक कोवळ्या हातांत शस्त्रं पाहून तुमच्या बांधवांची झोप उडेल. त्यांचे हात सळसळतील. धमण्या पेटतील. ते खडखडून जागे होतील. तुमची शस्त्रं आवेगानं स्वत: उचलून शत्रूच्या छातीचा वेध घेतील."[2] (चलो मेरी बहना उठाओ बन्दूक अपने हाथों में ! चलो दिल्ली की ओर ! सीमा पर तुम्हारे कोमल हाथों में शस्त्र देखकर तुम्हारी भाईयों की नींद उड़ जाएगी, उनके भी हाथ कुलबुलाएँगे, धमनियों का खून जलने लगेगा और वे खड़बड़ाकर उठ खड़े होंगे। तुम्हारे शस्त्र स्वयं तुम्हारे आवेग के बल से ही शत्रु की छाती भेद देंगे।) इस प्रकार सुभाषबाबू के वक्तव्य में, उनके संवादों में वह जादू था जो लोगों पर छा जाता था और उनमें देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने को प्रेरित करता था।

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 51
2. वही, पृष्ठ - 429

6. निड़र :-

भवलपुर मैदान की परेड के बाद नेताजी आजाद हिंद के सैनिकों को संबोधित करने के लिए मंच पर गए तभी अमेरिका के हवाई जहाज दूवारा फेका एक बम उनके सामने ही आ गिरता है फिर भी नेताजी वहाँ से हिलते नहीं है। शाहनवाज उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - "नेताजी खाली उतरा ! नेताजी खाली उतरा ऽ ! परंतु नेताजी मात्र कड्यासारखे उभे ! मंच सोडत नव्हते. शाहनवाज पुन्हा ओरडले, परंतु नेताजी मात्र एका वेगळ्या अभिमानाने उभे होते. अशी किती विमाने अवतरतील, किती बाँब फेकतील."[1] (नेताजी, नीचे उतरिए ! नेताजी, नीचे आ जाइए ! परंतु नेताजी थे कि खम्भे की तरह जहाँ के तहाँ खड़े थे ! वे मंच से हिलने को तैयार नहीं थे। शाहनवाज ने पुनः पुकारा, पर नेताजी एक न्यारे ही अभिमान के आवेश में यथास्थान खड़े रहे, कुछ इस भाव से कि देखे, ऐसे कितने हवाई जहाज आते हैं और कितने बम फेंकते हैं।) उपुर्यक्त कथन से उनकी साहसी वृत्ति तथा निड़रता का परिचय मिलता है।

7. एमिली के प्रेमी :-

सुभाषबाबू आय.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद उन्हें शादी के अनेक अवसर आए लेकिन उन्होंने सभी को ठुकरा दिया। वे अपने देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करना ही अपना पहला आद्य कर्तव्य मानते थे। सुभाषबाबू परिवार में जकड़कर रहना नहीं चाहते थे। वे अपने इलाज के लिए जब वे वियेना जाते हैं वहाँ 'इण्डियन स्ट्रगल' पुस्तक लेखन में सहायक के रूप में ऑस्ट्रियन युवती एमिली की नियुक्ति करते हैं। वह सुभाषबाबू का खान-पान, दवाई देना, पुस्तक लेखन में मदूद करना, ग्रंथालय से किताबे लाना आदि काम करती थी। सुभाषबाबू का और एमिली का एक-दूसरे के प्रति प्यार हो जाता है आरै सुभाषबाबू घरवालों की मान्यता लिए बिना ही शादी करते हैं। अत: यहाँ सुभाषबाबू एक प्रेमी के रूप में देखाई देते है।

8. एकता में विश्वास रखनेवाले :-

सुभाषबाबू देश की स्वतंत्रता के लिए एकता को महत्त्व देते हैं। वे लोगों में स्थित जाति-धर्म के भेदभाव को मिटाना महत्त्वपूर्ण समझते है। सिंगुापर की पडांग मैदान की

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 481

परेड की तैयारी देखने के पश्चात् रात बिरादरी कॅम्प में शीख, मुस्लिम, पारसी, आदि लोगों की भोजन की पंक्तियाँ अलग-अलग बैठती है तब सुभाषबाबू उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - "मी ब्रीटिशांना आव्हान देताना हिंदुस्तान एकसंघ असल्याची ग्वाही देतो आणि इकडं आम्ही भोजनाच्या पंगतीलाही एकत्र येत नसू, तर उद्या मृत्यूच्या कराल दाढेत एकत्र कसे येणार ?"[1] (मैं तो अंग्रेजों को चुनौती देते हुए हिन्दुस्तान के एकसूत्र में बँधे होने की दुहाई देता हूँ, और यहाँ हम भोजन की पंगत में भी एक साथ नहीं बैठ सकते तो कल मौत के विकराल जबड़ो का सामना करने में एक-दूसरे का साथ कैसो देंगे ?) उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि सुभाषबाबू देश की स्वतंत्रता के लिए लोगों में स्थित जातिभेद को मिटाकर उनमें एकता प्रस्थापित करने का प्रयास सुभाषबाबू ने किया है। अत: उनके ये विचार एकता के महत्त्व को स्पष्ट करनेवाले दिखाई देते हैं।

9. **कुशल राजनीतिज्ञ :-**

सुभाषबाबू अपने देश को गुलामी से मुक्त करने के लिए हिटलर तथा मुसोलिनी से मिलते हैं। जपान प्रधानमंत्री तेजो दूवारा इस संबंध में पूछनेपर वे उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - "मी हुकुमशहांची मदतच कशाला, परंतु माझ्या देशाच्या स्वातंत्र्यासाठी सैतानाशी सलगी करायला अजिबात मागंपुढं पाहणार नाही."[2] (अपने देश की स्वतंत्रता के लिए तानाशाहों से ही नहीं, बल्कि स्वयं शैतान से भी हाथ मिलाने में मैं तनिक भी आगे-पीछे नहीं देखूँगा।) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि नेताजी किसी भी तरह देश को आजाद करना चाहते थे। उक्त कथन से सुभाषबाबू के कुशल राजनीतिज्ञ व्यक्तित्व के पहलू का पता चलता है।

5.3 संवाद :

पात्रों के आपसी वार्तालाप को संवाद कहा जाता है। उपन्यास में संवादों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। कथावस्तु का विकास करने के लिए, पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट करने के लिए, देश-काल-वातावरण का बोध कराने के लिए, कथानक को गति देने के लिए संवादों की आवश्यकता होती है। संवाद सरस, मार्मिक, संक्षिप्त, रोचक, आकर्षक होने चाहिए ।

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 414
2. वही, पृष्ठ - 403

5.3.1 संवाद : पहला गिरमिटिया -

'पहला गिरमिटिया' एक बृहत् उपन्यास है। इसमें गिरिराज किशोर ने बड़ी कलात्मकता के साथ संवाद योजना की है। इसमें प्रयुक्त संवाद विषयानुकूल, पात्रानुकूल, संक्षिप्त, बड़े चरित्रोद्घाटक, अंग्रेजी वाक्यों से युक्त, रोचक, स्पष्ट, प्रवाहमई दिखाई देते हैं। संवादों में मुख्यत: मोहनदास और कस्तूर के संवाद, पोलक और मिली के संवाद, मोहनदास और मिस डिक के संवाद, मोहनदास और दादा अब्दुला के संवाद, मोहनदास और मिली के संवाद उल्लेखनीय प्रतीत होते है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है, जैसे -

5.3.1.1 रोचकता :-

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के संवादों में रोचकता दिखाई देती हैं, जैसे - मिस डिक और मोहनदास का संवाद द्रष्टव्य हैं -

"एक दिन मिस डि आयी और बोली, "गाँधी मैंने और मैक ने शादी करने का निश्चय कर लि है। आपका आशीर्वाद चाहिए।"

मोहनदास हँसकर बोले, "मेरा क्या होगा ?"

"मैं आपके लिए दुआ करूँगी कि मिसेज़ गाँधी जल्दी आ जाएँ।"

दोनो हँस दिये।"[1]

उक्त संवाद से समझने में देर नहीं लगती। मोहनदास और मिस डिक के रोचक संवाद का प्रयोग गिरिराज किशोर ने बड़ी कलात्मकता के साथ किया हुआ दिखाई देता है।

5.3.1.2 संक्षिप्तता :-

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में प्रस्तुत संवाद में संक्षिप्तता दिखाई देती है - हरि और मोहनदास का संवाद द्रष्टव्य हैं -

"तभी हरि आया, "बापू आप जोहान्सबर्ग जा रहे हैं ?"

"हाँ !"

"मैं भी चलूँगा।"

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 564

"अभी तुम बा के पास रहो। वक्त आने पर बुला लूँगा।"

"यहाँ मैं क्या करूँ ? वहाँ मैं भी सत्याग्रह करूँगा।"

"जरूर करना लेकिन अभी नहीं। पहले फिनिक्स में रहकर सेवा और त्याग के मर्म को समझो।"[1]

उक्त मोहनदास के उद्धरण द्वारा वे अपने बेटे हरि को त्याग, सेवा आदि का संदेश देते हैं।

गिरिराज किशोर 'पहला गिरमिटिया' में प्रयुक्त संवादों में वैविध्यता दिखाई देती है। प्रस्तुत संवाद रोचक, संक्षिप्त, अँग्रेजी वाक्यों से युक्त आदि कई प्रकार के दिखाई देते हैं। संवादों को सफल बनाने में गिरिराज किशोर सफल हुए है।

5.3.2 **संवाद : महानायक -**

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास के संवाद सघन, संपन्न एवं प्रभावशाली रहे हैं। इनमें चरित्र का उद्घाटन करनेवाले, रोचक, अँग्रेजी वाक्यों से युक्त, संक्षिप्त, पात्रानुकूल, विषयानुकूल, बड़े, प्रश्नात्मक आदि विभिन्न प्रकार के संवाद दिखाई देते हैं। विश्वास पाटील ने मुख्यत: माँ जननी और सुभाषबाबू के संवाद, एमिली और सुभाषबाबू के संवाद, महात्मा गांधी जी और सुभाषबाबू के संवाद, जवाहर और सुभाषबाबू के संवाद, जानकीनाथ और सुभाषबाबू के संवादो को विश्वास पाटील ने कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है।

5.3.2.1 **रोचकता :-**

विवेच्य उपन्यास में भी रोचक संवाद आ गए हैं। उदाहरण के लिए बसंतीदेवी और सुभाषबाबू का संवाद द्रष्टव्य हैं -

"अलिकडे महाराष्ट्रातील तुझे दौरे फारच वाढले आहेत. यापाठीमागे रहस्य काय ?"

"समजलं नाही."

"कोण मुलगी आहे रे ती ?"

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 710

“कुठली ?”

“मुंबईची - तुझ्या वाटेकडे अगदी डोळे लावून बसते म्हणतात !”

“असेल.”

“लग्न कधी केलंत ?”[1]

(“आजकल तुम्हारे महाराष्ट्र के दौरे बहुत बढ़ गये हैं। इसके पीछे क्या रहस्य है ?”

“मैं समझा नहीं।”

“कौन लड़की है रे वह ?”

“कौन-सी”

“मुंबई की - कहते हैं तेरी राह में आँखे बिछाये बैठी रहती है।”

“होगी।”

“कब किया ब्याह ?”)

उक्त संवाद से समजने में देर नहीं लगती कि उपर्युक्त संवाद रोचक तथा संक्षिप्त है।

5.3.2.2 संक्षिप्तता :-

विवेच्य उपन्यास के संवाद कहीं - कहीं पर संक्षिप्त बन पड़े हैं। जिससे संवादों में संक्षिप्तता दिखाई देती है। विभावती और सुभाषबाबू का संवाद द्रष्यव्य हैं -

“मॅडम, बोला, आपल्यासाठी मी काय करु शकतो ?”

“माझ्या आजारी दिराची सुटका. ते राजबंदी आहेत.”

“कसला आजार ?”

“क्षयाचा विकार आणि पोट दु:खी”

“ट्युबरक्युलॉसिस ? तर मग त्यांना आधीच सोडायला हवं होतं.”

“तीच तक्रार घेऊन.”

“नाव सांगल ?”

“सुभाषचंद्र बोस”[2]

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 123
2. वही, पृष्ठ - 147

("बोलिए मॅडम, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?"

"मेरे बीमार देवर की मुक्ति। वे राजबंदी हैं।"

"कैसी बीमारी है ?"

"क्षय-विकास और पेट की पीड़ा।"

"ट्युबरक्युलोसिस ? ऐसी स्थिति में तो उन्हें पहले ही छोड़ दिया जाना चाहिए था।"

"वही शिकायत लेकर तो...."

"नाम बोलिए।"

"सुभाषचंद्र बोस !")

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अपने देवर सुभाषबाबू की बीमारी को लेकर विभावती की मानसिक दशा का चित्रण दिखाई देता हैं।

5.4 देश-काल-वातावरण :

देश-काल-वातावरण से तात्पर्य हैं - उपन्यास में चित्रित तत्कालीन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तथा आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि। देशकाल वातावरण के बारे में डॉ. प्रताप नारायण टंड़न लिखते हैं - "देशकाल के अंतर्गत किसी भी देश या समाज की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा समाज की कुरीतियाँ या विशेषताएँ आदि समझी जाती है।"[1] अत: स्पष्ट है कि उपन्यास में स्वाभाविकता लाने की दृष्टि से इन सब बातों का होना आवश्यक है। देश-काल वातावरण के बारे में डॉ. त्रिभुवन सिंह लिखते हैं - "घटनाओं, पात्रो और उसके कार्यकलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने का कार्य उपन्यास में देश, काल और वातावरण के दूवारा ही संभव हो पाता है। वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज और उसके आस-पास घिरी परिस्थितियाँ ही देशकाल वातावरण की संज्ञा धारण करती है।"[2] अत: कहना गलत नहीं होगा कि देशकाल वातावरण में स्वाभाविकता एवं सहजता लाने के लिए उपर्युक्त बातों का होना अनिवार्य है।

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यासों में कथा-शिल्प का विकास, पृष्ठ - 87
2. डॉ. त्रिभुवनसिंह - हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, पृष्ठ - 287

5.4.1 देशकाल वातावरण : पहला गिरमिटिया -

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास महात्मा गांधी जी के दक्षिण अफ्रीकी जीवन पर केंद्रित उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रमुखत: सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश का चित्रण लेखक ने बड़ी कलात्मकता के साथ किया हुआ दिखाई देता है। इस उपन्यास में श्वेत-अश्वेत की समस्या, गिरमिटियों का गंदा पारिवारिक वातावरण, अंग्रेजों के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन, जेल जीवन की यातनाएँ, गिरमिटियों की आर्थिक तथा दयनीय जिंदगी का चित्रण दिखाई देता है। पहला गिरमिटिया उपन्यास मोहनदास के सन् 1893 से लेकर सन् 1914 तक के दक्षिण अफ्रीकी जीवनपर केंद्रित उपन्यास है। तात्कालीन समय दक्षिण-अफ्रीका में वर्णभेद बड़ी प्रखरता से दिखाई देता था। दो गोरे अधिकारी रेल में आते ही मोहनदास को संबोधित करते हुए कहते हैं - "तुमसे इस डिब्बे में बैठने के लिए किसने कहा ? अपना सामान उठाओ, वैन में चले जाओ, कुलियो के लिए वहीं है।"[1] कहना सही होगा कि तत्कालीन समय में रेल में सिर्फ गोरे अधिकारीयों को ही स्थान था। मोहनदास के पास फर्स्ट क्लास का टिकट होते हुए भी अश्वेत होने के कारण गोरे अधिकारी उन्हें वैन में जाने के लिए कहते हैं। वैन में जाने से इन्कार करने पर दो गोरे अधिकारी उन्हें पिटते हैं। इससे यह मालूम हो जाता है उस वक्त समाज में वर्ण-व्यवस्था की व्याधि फैली हुई थी। इसका चित्रण गिरिराज किशोर यथार्थता एवं कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं।

शासन दूवारा दुर्लक्षित होने के कारण कुली समाज की कुलियों का रहन-सहन तथा स्थापित दयनीय व्यवस्था का चित्रण करते हुए गिरिराज किशोर लिखते हैं - "म्युनिसिपैलिटी की तरफ से ... और किसी तरह की सफाई की सुविधा नहीं थी। न सड़के थी न रोशनी। बस्ती में रहनेवालों के प्रति ही जब सिटी काउंसिल का कोई लगाव नहीं था तो बस्ती की सुविधाओं की चिंता कौन करता? गंदगी का नंगा नाच था। बस्तीवाले बदनाम थे। गन्दे-बुरे, बीमारी के संवाहक, हर चीज उनके सीर थी।"[2] कहना गलत न होगा कि गिरमिटियाँ लोग दयनीय जिंदगी जिते थे। गिरमिटियों को रेल में प्रवेश नहीं था, न कोच गाड़ी में, न होटल में, शहर में भी कुछ ही स्थान पर प्रवेश दिया जाता था। अत: कहना सही होगा लेखक ने समाज में फैले वर्णद्वेष और काले व्यक्ति के प्रति घृणा की दृष्टि की आलोचना की है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 101
2. वही, पृष्ठ - 556-557

गिरमिटियों की दृष्टी से आर्थिक परिवेश विचारणीय रहा है। उन्हें काम करने के बाद ही दो वक्त की रोजी-रोटी मिलती थी। लोगों की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। उनमें अर्थाभाव के कारण ही वे बिमार होने के बावजूद भी अपना ईलाज कराने के लिए अस्पताल नहीं जाते थे। अर्थाभाव के कारण ही वे अपने बच्चों को स्कूल तक नहीं भेजते थे। गिरमिटियों की एकता स्थापित कर मोहनदास 'नेटाल काँग्रेस' की स्थापना करते हैं तथा माह दो पौण्ड पैसे हर एक को देना आवश्यक समझते हैं। सब गिरमिटिये इस बात को राजी होते हैं लेकिन पैसे माँगने के लिए जाने पर उन्हें पैसे नहीं मिलते। गिरमिटियों की आर्थिक स्थिति का चित्रण करते हुए स्वयं लेखक लिखते हैं - ''जिसके पास जाओ वह या तो मना कर देता - हैं नही, कहीं गये हैं। सामने पड़ जाता तो कह देता किसी और दिन आना।''[1] उक्त कथन के आधार पर कहना सही होगा कि लेखक ने गिरमिटियों के तत्कालीन दयनीय स्थिति का अंकन बड़ी कलात्मकता के साथ किया है।

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में राजकीय परिवेश का चित्रण कम-अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

5.4.2 देश-काल-वातावरण : महानायक -

'महानायक' उपन्यास आजादी के क्रांतिवीर सुभाषबाबू के जीवन पर केंद्रित उपन्यास है। इस उपन्यास में देशकाल वातावरण की दृष्टि से राजनीतिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश आदि का चित्रण लेखक ने कलात्मकता के साथ अंकित किया हुआ परिलक्षित होता है। 'महानायक' उपन्यास में राजनीतिक परिवेश की दृष्टि से देखा जाय तो इसमें स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय स्थिति का चित्रण उपन्यासकार विश्वास पाटील ने किया है। भारत देश अँग्रेजों की गुलामी में जकड़ा हुआ था। काँग्रेस अध्यक्ष के पद पर सुभाषबाबू थे। किंतु स्वराज्य प्राप्ति के संदर्भ में गांधीजी के अहिंसात्मक विचार दिखाई देते हैं तो सुभाषबाबू के क्रांतिकारी विचार। सुभाषबाबू के क्रांतिकारी विचारों के कारण गांधीजी को उनके विचार पसंद नहीं आते थे। गांधीजी सुभाषबाबू को संबोधित करते हुए कहते हैं - ''सुभाष, ध्यानात ठेव. जरूर पडली तर स्वातंत्र्याची वाट युगानुयुगं पहायची माझी तयारी आहे. परंतु हिंसाचाराच्या मार्गानं स्वराज्यप्राप्तिचा विचार मी स्वप्नातही करू शकणार नाही.''[2] (सुभाष, यह बात

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 284
2. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 137

ध्यान में रखो, जरूरी हुआ तो मैं युग-युगांतर तक स्वतंत्रता की प्रतीक्षा करने को तैयार हूँ, परंतु हिंसा के मार्ग से स्वतंत्रता पाने का विचार मैं स्वप्न में भी नहीं कर सकता।) प्रस्तुत उपन्यास में महात्मा गांधीजी और सुभाषबाबू भले ही दो राजनीतिक दलों का समर्थन करनेवाले हो, उनके विचारों में मतभेद हो, किंतु दोनों के राजनीतिक विचारों में देशनिष्ठा दृष्टिगोचर होती है। लेखक विश्वास पाटील ने महात्मा गांधीजी तथा सुभाषबाबू के तत्कालीन विचारों को प्रकट किया है।

महात्मा गांधी जी तथा सुभाषबाबू में आपसी मतभेद निर्माण हो जाने के कारण सुभाषबाबू जर्मनी तथा जपान में जाकर वहाँ के राजकीय नेताओं को मिलना 'आजाद हिंद फौज' का निर्माण करना यह राजकीय परिवेश की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। राजकीय परिवेश की दृष्टि से काँग्रेस पद के लिए स्वार्थी कूटनीति भी दिखाई देती है।

सामाजिक परिवेश की दृष्टि से स्त्रियों के अधिकार सीमित थे। उनका कार्यक्षेत्र सीमित था। स्त्रियों का रेल में घूमना भी गैर माना जाता था। आधुनिक विचारों का अभाव था। आर्थिक परिवेश का चित्रण भी कम अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

5.5 भाषा-शैली :

किसी भी रचनाकार के अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम उसकी भाषा है। रचनाकार या साहित्यकार भाषा के माध्यम से ही अपने विचारों, भावनाओं तथा संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देता है। भाषा के कारण ही रचनाकार अपने पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करने में सफलता प्राप्त करता है। उपन्यास में भाषा का महत्त्व अनन्य साधारण है। भाषा की महत्ता के बारे में डॉ. दंगल झाल्टे सही लिखते हैं - "उपन्यास में भाषा की एक स्वतंत्र सत्ता होकर उसकी स्थिति निश्चित रूप से मध्यवर्ती हो गई है। अत: भाषा को उपन्यास के एक मूल्यवान सर्जक तत्व के रूप में परखकर उसके आधार पर उपन्यास का मूल्यांकन करना नई समीक्षा का दायित्व है।"[1] अत: कहना सही होगा कि उपन्यास में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भाषा पर ही किसी कृति की सफलता एवं जरीयता निर्भर होती है।

---

1. डॉ. दंगल झाल्टे - नए उपन्यासों में नए प्रयोग, पृष्ठ - 132

5.5.1 भाषा-शैली : पहला गिरमिटिया -

गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मुख्यत: उर्दू, हिंदी, अवधी, भोजपुरी, तुर्की, फारसी, अंग्रेजी, अरबी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं का प्रयोग बड़ी कलात्मकता के साथ किया हुआ दिखाई देता है। इनकी भाषा में विषयानुकूलता, पात्रानुकूलता, चित्रात्मकता, काव्यात्मकता, संकेतात्मकता आदि कई प्रयोग दिखाई देते हैं। गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'पहला गिरमिटिया' की भाषा का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित भाषा के अलग-अलग रूप तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द प्राप्त होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

5.5.1.1 संस्कृत शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में कहीं-कहीं संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, जैसे - 'मंजर'[1], 'उत्फुल्ल'[2], 'प्रत्यावेदन'[3], 'श्रमिक'[4], 'आश्वस्त'[5], 'विरत'[6], 'सहिष्णु'[7], 'संकल्प'[8], 'अन्तर्मन'[9], 'दायित्व'[10], 'अमूल्य'[11] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यासों में संस्कृत शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 244
2. वही, पृष्ठ - 245
3. वही, पृष्ठ - 246
4. वही, पृष्ठ - 270
5. वही, पृष्ठ - 310
6. वही, पृष्ठ - 481
7. वही, पृष्ठ - 542
8. वही, पृष्ठ - 748
9. वही, पृष्ठ - 749
10. वही, पृष्ठ - 801
11. वही, पृष्ठ - 801

5.5.1.2 अरबी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में अरबी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, जैसे - 'ख्याल'[1], 'हब्शी'[2], 'हुक्का'[3], 'ताज्जुब'[4], 'हाज़िर'[5], 'मंजिल'[6], 'अक्सर'[7], 'फ़ैसला'[8], 'मुवक्किल'[9], 'कानून'[10], 'जुर्माना'[11], 'मुल्क'[12], 'सब्र'[13], 'खिलाफ'[14], 'फिलहाल'[15] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यासों में अरबी शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

5.5.1.3 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में अंग्रेजी शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं, जैसे - 'ऑफ'[16], 'असोसिएशन'[17], 'थैंक्यू'[18], 'बिल्डिंग'[19], 'मेजेस्ट्री'[20], 'लाइट हाऊस'[21], 'रिपोर्ट'[22], 'कोट'[23], 'प्रैक्टिस'[24] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दों का जगह-जगह पर प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है।

....

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 127
2. वही, पृष्ठ - 127
3. वही, पृष्ठ - 180
4. वही, पृष्ठ - 191
5. वही, पृष्ठ - 214
6. वही, पृष्ठ - 214
7. वही, पृष्ठ - 280
8. वही, पृष्ठ - 302
9. वही, पृष्ठ - 313
10. वही, पृष्ठ - 319
11. वही, पृष्ठ - 351
12. वही, पृष्ठ - 511
13. वही, पृष्ठ - 563
14. वही, पृष्ठ - 674
15. वही, पृष्ठ - 706
16. वही, पृष्ठ - 280
17. वही, पृष्ठ - 466
18. वही, पृष्ठ - 466
19. वही, पृष्ठ - 505
20. वही, पृष्ठ - 506
21. वही, पृष्ठ - 506
22. वही, पृष्ठ - 506
23. वही, पृष्ठ - 525
24. वही, पृष्ठ - 562

5.5.1.4 काव्यात्मक भाषा :-

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' में कहीं-कहीं काव्यात्मक भाषा का प्रयोग दिखाई देता है। इससे हमें लेखक की काव्य प्रतिभा का पता चलता है। गिरमिटियों को दक्षिण-अफ्रीका में अपने परिवारवालों की याद आती है। जाड़ों के दिनों में गिरमिटिया स्त्रीयाँ गाना गाती थी तब उनकी इस वेदना को शब्दबद्ध करते हुए गिरिराज किशोर लिखते हैं -

"सुन-सुन रे भारतवासी, सुन
हम अपनी धरती से उखडे जन,
हम अपनी किस्मत पर आँसू बहावें।
कलकत्ता और मुम्बई से जहजवा छूटा,
भैया छूटा, बहना छूटी
मैया छूटी . . . . . घरवा छूटा।
देशवा याद आवे, रोवैं सो रोवें।"[1]

उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि गिरिराज किशोर ने बड़ी कलात्मकता के साथ अपनी काव्यप्रतिभा अभिव्यक्त की है।

5.5.1.5 मुहावरों-कहावतों का प्रयोग

विवेच्य उपन्यास में आम लोगों में प्रचलित मुहावरों और कहावतों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है, जैसे - "मेढकी नाल ठुकवा ले तो घोड़ा थोड़े ही बन जाएगी।"[2], "साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे"[3], 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'[4] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यासों में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग दिखाई देता है।

5.5.1.6 सूक्तियों का प्रयोग

'पहला गिरमिटिया' में सूक्तियों का प्रयोग बड़ी कलात्मकता के साथ किया हुआ दिखाई देता है - "अनास्था के लिए भी आस्था की जरूरत होती है।"[5], "साहस और भावुकता कभी-कभी एक-दूसरे के आडे आ खड़े होते हैं।"[6] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यासों में सूक्तियों का प्रयोग मिलता है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 262
2. वही, पृष्ठ - 103
3. वही, पृष्ठ - 167
4. वही, पृष्ठ - 543
5. वही, पृष्ठ - 44
6. वही, पृष्ठ - 184

5.5.2 शैली : पहला गिरमिटिया -

शैली को अँग्रेजी में 'style' कहा जाता है। शैली के द्वारा लेखक किसी विषय की गहराई में उतरकर अपने अंत:करण का उद्घाटन करता है। शैली वह भाषिक वैशिष्ट्य है जो किसी रचनाकार के भावों और विचारों को यथातथ्य रूप में प्रकट करती है। अत: शैली लेखक की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है।

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' शैली के पत्रात्मक, टेलिफोनिक, आत्मकथनात्मक, इंटरव्यू, प्रश्नोत्तर, वर्णनात्मक, डायरी, इतिवृत्तात्मक तथा फ्लैशबैक आदि रूपों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इन विभिन्न शैलियों में से कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं वे इस प्रकार हैं -

5.5.2.1 आत्मकथनात्मक शैली :-

आत्मकथा शैली में मनुष्य की अपनी जीवनी स्वयं द्वारा ही कही जाती है। इसमें लेखक का उद्देश्य किसी न किसी रूप में अपने बारे में कुछ लिखना होता है। इसमें लेखक के अनुभव, विचार तथा पृष्ठभूमि का चित्रण और विश्लेषण प्रमुख रहता है। यह शैली मुख्य रूप से आत्मविश्लेषण के आधार पर विकसित हुई है। 'पहला गिरमिटिया' के मदनजीत का कथन द्रष्टव्य है - "मैं जानता हूँ मैंने कैसे इस प्रेस को बनाया है? घर-घर जाकर इण्डियन ओपीनियन के ग्राहक बनाये हैं। अपनी जिंदगी को जोखिम में डाला है। मैंने अपना सबकुछ इसी में झोंक दिया है।"[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि उपर्युक्त कथन आत्मकथनात्मक शैली का है।

5.5.2.2 पत्रात्मक शैली :-

पत्र शैली, आत्मकथनात्मक शैली का ही एक रूप होता है। यह एक आत्म-भावनात्मक अभिव्यक्ति का प्रत्यक्ष साधन है। एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के पास कोई लिखित संदेश भेजना ही पत्र कहलाता है। पत्रों के द्वारा ही कथा के उलझे हुए सूत्र सुलझ जाते हैं। पत्रों में हम वह बात लिखते हैं जिन्हें प्रत्यक्ष कहने में संकोच होता है। गिरिराज किशोर के "पहला गिरमिटिया"[2] उपन्यास में पत्र शैली की भरमार दिखाई देती है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 592
2. वही, पृष्ठ - 79, 80, 85, 85-86, 124, 196-197, 259-260, 280-282, 739, 749-750, 853, 890

5.5.2.3 प्रश्नात्मक शैली :-

प्रश्नात्मक शैली एक नया शैली प्रकार है। इसमें एक-दूसरे को प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त किए जाते हैं। इसलिए इस शैली को प्रश्नात्मक शैली कहा जाता है। यहाँ मोहनदास और कस्तुरबा का कथन द्रष्टव्य है -

"तुमने पॉट खाली नहीं किया?
कस्तूर ने काम करते ही जवाब दिया, नहीं।"
"क्यों?"
"मैं यह काम नहीं करूँगी।"
"क्यों?"
"मैं अपना धर्म-कर्म नहीं बिगाड़ूँगी।"
"सेवा भी धर्म-कर्म का ही हिस्सा है।"[1]

मोहनदास तथा कस्तुरबा के उक्त संवाद प्रश्नात्मक शैली में दृष्टिगोचर होते हैं।

5.5.2.4 वर्णनात्मक शैली :-

सुविधाजनक होने के कारण यह शैली सर्वाधिक प्रसिद्ध है। विषय विस्तार की आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। उपन्यासकार वर्णन के द्वारा अपनी बात स्पष्ट करता है। "पहला गिरमिटिया"[2] में वर्णनात्मक शैली प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है।

5.5.2.5 डायरी शैली :-

डायरी व्यक्ति का निजी दस्तावेज होता है। लेखक उसमें उन्हीं बातों को लिखता है जिन्हें समाज के सम्मुख सामाजिक बंधनों के कारण प्रकट नहीं कर पाता। डायरी प्रथम पुरूष में लिखी जाती है। इससे अन्तर्मन को समझने में देर नहीं लगती। गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' में डायरी शैली का प्रयोग दिखाई देता है। मोहनदास डरबन में आने के बाद डायरी का लेखन करते हुए लिखते हैं - "डरबन आये एक हफ्ता होने को आया, लगता है ... स्थिति को स्वीकार कर लेना विकल्प खत्म कर देता है।"[3] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती की उपर्युक्त कथन डायरी शैली का है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 475-476
2. वही, पृष्ठ - 19-51
3. वही, पृष्ठ - 95

5.5.2.6 किस्सागोई शैली :-

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में उर्दू की प्रसिद्ध किस्सागोई शैली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। उपन्यास में प्रमुख कथा तथा गौण कथाओं के साथ ऐसे छोटे-छोटे किस्से आए हें जिससे उपन्यास पठनीय और मनोरंजक बन गया है। यहाँ किस्सागोई शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है -

मोहनदास एक अंग्रेज अधिकारी सायमाण्ड्स को एक किस्सा बताते हुए कहते हैं - "एक बार मेरे घर में कुछ अंग्रेज आ गये थे। वे मुझसे बोले, हिन्दुस्तानी प्लैग फैलाते हैं। मैंने उनसे कहा - प्लेग तो चूहों से फैलता है।"[1] उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर ने किस्सागाई शैली को उपन्यास में बड़ी सफलता से प्रयोग किया है।

5.5.3 भाषा-शैली : महानायक -

विश्वास पाटील जी ने 'महानायक' उपन्यास में सहज सरल एवं रसयुक्त भाषा का प्रयोग किया है। मुख्यत: मराठी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, बंगाली आदि अनेक भाषाओं के शब्दों का प्रयोग बड़ी कलात्मकता के साथ किया हुआ परिलक्षित होता है। विश्वास पाटील की भाषा में संक्षिप्तता, प्रवाहमयता, सरलता, चित्रात्मकता आदि गुण दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में भाषा के अलग-अलग रूप तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द प्राप्त होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 654

5.5.3.1 अरबी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में अरबी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे - 'गद्दारी'[1], 'कब्जा'[2], 'खतरनाक'[3], 'कैफियत'[4], 'गजल'[5], 'नजर'[6], 'इज्जत'[7], 'बिल्कुल'[8], 'बग्गी'[9], 'गुलाम'[10], 'गफलत'[11], 'गुलामी'[12], 'लिफाफा'[13], 'हमाल'[14] 'मुश्किल'[15] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में अरबी शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

5.5.3.2 फारसी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में फारसी शब्द भी प्रयुक्त हुए है, जैसे - 'जबान'[16], 'मेहरबान'[17], 'मर्द'[18], 'नाजूक'[19], 'नाकबूल'[20], 'दगाबाज'[21], 'कबाब'[22], 'बेहोश'[23], 'पेशकश'[24], 'सरहद'[25] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में फारसी शब्दों का जगह-जगह पर प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है।

....

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 3
2. वही, पृष्ठ - 3
3. वही, पृष्ठ - 5
4. वही, पृष्ठ - 7
5. वही, पृष्ठ - 12
6. वही, पृष्ठ - 15
7. वही, पृष्ठ - 16
8. वही, पृष्ठ - 21
9. वही, पृष्ठ - 24
10. वही, पृष्ठ - 25
11. वही, पृष्ठ - 50
12. वही, पृष्ठ - 54
13. वही, पृष्ठ - 54
14. वही, पृष्ठ - 60
15. वही, पृष्ठ - 368
16. वही, पृष्ठ - 5
17. वही, पृष्ठ - 5
18. वही, पृष्ठ - 14
19. वही, पृष्ठ - 16
20. वही, पृष्ठ - 24
21. वही, पृष्ठ - 40
22. वही, पृष्ठ - 52
23. वही, पृष्ठ - 94
24. वही, पृष्ठ - 100
25. वही, पृष्ठ - 107

5.5.3.3 संस्कृत शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में संस्कृत शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे - 'कर्कश'[1], 'अस्तित्व'[2], 'प्रत्यक्ष'[3], 'तपस्वी'[4], 'मार्गदर्शक'[5], 'वल्कलं'[6], 'दुर्गंधी'[7], 'आशीर्वाद'[8], 'वरिष्ठ'[9], 'अभेद्य'[10], 'तीक्ष्ण'[11], 'प्रतीज्ञा'[12], 'हृदय'[13], 'सुप्रभात'[14] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में संस्कृत शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

5.5.3.4 अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग :-

विवेच्य उपन्यास में अँग्रेजी शब्द भी प्रयुक्त हुए है, जैसे - 'कमांडर'[15], 'करिअर'[16], 'एजंट'[17], 'आर्मी'[18], 'हेडक्वार्टर'[19], 'स्टैंटमन'[20], 'सैल्यूट'[21], 'बॅरिस्टर'[22], 'सेंटर'[23], 'रेजिमेंट'[24], 'कॅप्टन'[25], 'डिव्हिजन'[26], 'बॉंब'[27], 'वॉर्ड'[28], 'डॉक्टर'[29] आदि। इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में अँग्रेजी शब्दों का जगह-जगह पर प्रयोग किया गया है।

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 3
2. वही, पृष्ठ - 20
3. वही, पृष्ठ - 20
4. वही, पृष्ठ - 36
5. वही, पृष्ठ - 36
6. वही, पृष्ठ - 36
7. वही, पृष्ठ - 44
8. वही, पृष्ठ - 49
9. वही, पृष्ठ - 54
10. वही, पृष्ठ - 59
11. वही, पृष्ठ - 64
12. वही, पृष्ठ - 64
13. वही, पृष्ठ - 90
14. वही, पृष्ठ - 90
15. वही, पृष्ठ - 5
16. वही, पृष्ठ - 6
17. वही, पृष्ठ - 8
18. वही, पृष्ठ - 17
19. वही, पृष्ठ - 17
20. वही, पृष्ठ - 41
21. वही, पृष्ठ - 68
22. वही, पृष्ठ - 257
23. वही, पृष्ठ - 319
24. वही, पृष्ठ - 339
25. वही, पृष्ठ - 479
26. वही, पृष्ठ - 545
27. वही, पृष्ठ - 617
28. वही, पृष्ठ - 679
29. वही, पृष्ठ - 681

5.5.4 शैली : महानायक -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में विभिन्न शैलियों का प्रयोग मिलता है। इनमें पत्रात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली तथा फ्लैशबैक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है। इन विभिन्न शैलियों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

5.5.4.1 पत्रात्मक शैली :-

पत्र शैली यह आत्मकथात्मक शैली का ही एक रूप होता है। यह एक आत्मभावनात्मक अभिव्यक्ति का प्रत्यक्ष साधन है। एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के पास कोई लिखित संदेश भेजना ही पत्र कहलाता है। पत्रों के दूवारा ही कथा के उलझे हुए सूत्र सुलझ जाते हैं। पत्रों में हम वह बात लिखते हैं जिन्हें प्रत्यक्ष कहने में संकोच होता है। विश्वास पाटील ने "महानायक"[1] में बड़ी कलात्मकता के साथ प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है।

5.5.4.2 प्रश्नात्मक शैली :-

प्रश्नात्मक शैली में एक-दूसरे को प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त किए जाते हैं तथा मन की शंकाओं का निरसन किया जाता है। यहाँ महादेव भाई तथा सुभाषबाबू का संवाद द्रष्टव्य है -

"“महादेवभाई, गांधीजींचा मूड कसा आहे?"

महादेवभाई हसू आवरत बोलले, "सुभाषबाबू, तुम्ही आज खूपच विनोदी बोलू लागला !"

"का हो?"

"तुम्ही अन् बापूंच्या मूडचा कधीपासून विचार करू लागला?"

"पण त्यांच्या भेटीची परवानगी -"

"तुम्हाला कशासाठी हवी परवानगी? वादळ कधी परवानगीची वाट पहात दारावर थांबतं का?""[2]

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 225, 390, 565, 581
2. वही, पृष्ठ - 223

("महादेवभाई, गांधीजी का मूड कैसा है?"

महादेवभाई हँसी रोकते हुए बोले, "सुभाषबाबू, आज तो आप बड़े विनोदी मिजाज में बोल रहे हैं।"

"क्यों भाई, क्या हो गया?"

"आप भला बापू के मूड के बारे में कब से पूछने लगे?"

"पर उनसे मुलाकात करने की इजाजत ..."

"आपको इजाजत की क्या जरूरत? तूफान भी क्या कभी इजाजत की बाट जोहता दरवाजे पर रूका रहा है?")

5.5.4.3 **वर्णनात्मक शैली :-**

यह शैली सुविधाजनक होने के कारण सर्वाधिक प्रसिद्ध है। विषय विस्तार की आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। उपन्यासकार वर्णन के द्वारा अपनी बात स्पष्ट करता है। "महानायक"[1] में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग बड़ी सफलता से किया हुआ दिखाई देता है।

5.5.4.4 **आत्मकथनात्मक शैली :-**

आत्मकथनात्मक शैली में लेखक 'मैं' के द्वारा अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। 'महानायक' में सुभाषबाबू का कथन द्रष्टव्य है - "माझं जीवन हे असं धगधगतं. ब्रिटिश साम्राज्यरूपी राक्षसाला लोळवल्याशिवाय मला सुख लाभणार नाही. तुरूंगातले माझ्यावरचे अत्याचार, पठाणांकडून सडकून मार, माथ्यावरचे ते तप्त पत्रे, देशाच्या भल्यासाठी वरिष्ठांशी चाललेला अव्याहत संघर्ष, भेटणाऱ्या नव्या सहकार्यांबद्दल हर्ष, पण निम्म्यात सोडून जाणाऱ्या जिवलगांबद्दल दुःख, कधी माझ्या छातीत गोळी बसेल किंवा एखाद्या दिवशी ब्रिटिशांच्या जुलमी गिलोटिनखाली नारळासारखी मस्तकाची छकलं होतील ... कशाचंच काही सांगवत नाही."[2] (मेरा जीवन तो ऐसे ही धधकता अग्निकुंड बना हुआ है। इस ब्रिटिश साम्राज्यरूपी राक्षस का विनाश किये बिना मुझे चैन नहीं है। बंदीगृह में नारकीय यातना, लाठियों के प्रहार, जलते पतरों के नीचे तपना, देश के कल्याण के लिए वरिष्ठ नेताओं के साथ

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 223
2. वही, पृष्ठ - 164

सतत संघर्ष, नये साथियों के मिलने का हर्ष तो बीच में ही साथ छोड़ जाने का हार्दिक दु:ख, कभी मेरी छाती में कोई गोली आ घँसे, या किसी दिन अँग्रेजों के रक्तरंजित गिलेटिन के नीचे मस्तक नारियल की तरह विच्छिन्न हो जाय - कौन कह सकता है, कब क्या हो जाय?)

5.6 उद्देश्य :

हर साहित्य निर्मिति के पीछे साहित्यकार का अपना विशिष्ट उद्देश्य होता है। अर्थात् हर साहित्यकृति उद्देश्यपूर्ण ही होती है। विवेच्य उपन्यासकारों ने भी विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर ही उपन्यासों की निर्मिति की है। कालानुरूप उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ दिखाई देता है। उपन्यास में मनोरंजन आदि उद्देश्य पीछे रहकर अब सामाजिक स्थिति, समस्याओं आदि का यथार्थ चित्रण उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य बनता चला जा रहा है। उद्देश्य की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए श्रीमती बसंती पंत जी लिखती हैं - ''उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यासकार का मुख्य दायित्व मानवीय चेतना के निरंतर गतिशील स्तरों को यथार्थ रूप में रूपायित करना है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार कालानुरूप उपन्यासों में निरंतर परिवर्तन करता है।

'पहला गिरमिटिया' और 'महानायक' उपन्यासों में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक आदि स्थितियों का चित्रण मिलता है। अपने देश की पारतंत्र्य से स्वतंत्रता तक की गाथा का इतिहास भूलनेवाली आधुनिक पीढ़ी के सामने इस इतिहास के पन्ने पलटने का कार्य विवेच्य उपन्यासों ने किया है। आज सुभाषबाबू तथा महात्मा गांधी जैसे व्यक्तित्व से या उनके विचारों से लोगों को फिर से परिचित कराना ही इन उपन्यासों का प्रधान प्रतिपाद्य है।

5.6.1 उद्देश्य : पहला गिरमिटिया -

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' समाजहित की हिमायत करनेवाले निरर्थक उद्देश्यों की पूर्ति करता है, जो इस प्रकार है - दक्षिण अफ्रीका में पाँच साल के गिरमिट (एग्रीमेंट) पर गए मिरमिटियों की अन्याय, अत्याचार, शोषण, बेबस तथा बेसहारा जिंदगी का दयनीय चित्रण प्रस्तुत करना तथा मोहनदास द्वारा उस स्थिति से बाहर निकलने के लिए किए गए अविरत संघर्ष का चित्रण करना लेखक का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

---

1. श्रीमती बसंती पंत - हिंदी उपन्यास रचना-विधान और युग-बोध, पृष्ठ - 36

इस उपन्यास में मुख्यत: गोरों का भारतीय गिरमिटियों की ओर देखने का नजरिया, वर्णभेद (श्वेत-अश्वेत) की समस्या, मजदूर गिरमिटियों का शोषण, गिरमिटियों का पशुतुल्य एवं अपमानित जीवन, गांधीजी का सत्याग्रह आंदोलन, श्वेत-अश्वेत की खाई मिटाने का प्रयास, अंग्रेजी शिक्षा का विरोध, 'इण्डियन ओपीनियन' दूवारा लोगों में जनजागृति करने का प्रयास, 'फिनिक्स आश्रम' में गिरमिटियों के बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था, मातृभाषा का प्रचार-प्रसार, हिंदु-मुस्लिमों की एकता, भारतीय संस्कृति का गुनगान, अवैध यौन संबंध का विरोध, श्रम की महत्ता, गिरमिटियों में एकता लाने का प्रयास, अन्याय-अत्याचार के बारे में चेतना जागृति, गिरमिटियों के छिने गए अधिकार वापिस दिलाने में मोहनदास को सफलता आदि अनेक प्रकार के उद्देश्यों को सामने रखकर गिरिराज किशोर ने इस उपन्यास की निर्मिति की है।

मोहनदास गांधी के प्रेम तथा सत्याग्रह के दूवारा गोरों के सरकार से प्राप्त विजयगाथा समाज के सम्मुख रखना तथा गांधी जी के आदर्शों को महत्ता प्रस्थापित करना। इस उपन्यास में मोहनदास के अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण मोहनदास से 'महात्मा' (1893 से 1914 तक) बनने की संघर्ष यात्रा का चित्रण करना उनके दूवारा भारत के गिरमिटियों की मुक्ति के संघर्ष का चित्रण करना उपन्यास का उद्देश्य है। मोहनदास के सत्य, अहिंसा, सदाचार, सत्याग्रह, अहिंसा, प्रेम आदि मूल्यों का उद्घाटन तथा उन आदर्शों की ओर समाज को प्रेरित कराना उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

5.6.2 उद्देश्य : महानायक -

विश्वास पाटील का 'महानायक' बहुआयामी उद्देशों को लेकर प्रस्तुत होता है जो उद्देश्य नयी पीढ़ी की दृष्टि से उपलब्धि सिद्ध होते हैं - सुभाषबाबू के चरित्रगत पहलुओं को चित्रित करना तथा उनके राष्ट्रप्रेमी, त्यागी, कर्तव्यप्रिय, नीड़र, क्रांतिकारी आदि विभिन्न गुणों को समाज के सम्मुख प्रकट करना उपन्यास का प्रधान उद्देश्य रहा है। इसमें सुभाषबाबू का बचपन, मेधावी व्यक्तित्व, आय.सी.एस. में चौथे नंबर से उत्तीर्ण होना, आय.सी.एस. से त्यागपत्र, काँग्रेस का अध्यक्ष बनना, नौकरी के काबिल लोगों को नौकरियाँ

प्राप्त कराने का प्रयत्न करना, स्वार्थी राजकीय लोगों की राजनीति, गांधीजी से मतभेद, काँग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र, जर्मन में हिटलर से भेंट, मदद न मिलने पर पणडुब्बियों दूवारा की गई खतरनाक जपान यात्रा, एमिली से विवाह, जपान सरकार दूवारा 'आजाद हिंद फौज' निर्माण में मदद की घोषणा करना, लोगों का 'आजाद हिंद फौज' के निर्माण में धनसंपत्ति देशकार्य के लिए दान करना, आजाद हिंद फौज का निर्माण, अमेरिका दूवारा हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराना, रशिया जाते समय हवाई जहाज दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु होना आदि अनेक प्रकार के उद्‌देश्यों को सामने रखकर विश्वास पाटील ने इस उपन्यास की निर्मिति की है।

अँग्रेजों से गुलामी की मुक्ति, शांति से नहीं बल्कि क्रांति से ही संभव है। ऐसे सुभाषबाबू के क्रांतिकारक विचारों से लोगों को परिचित कराना। जैसे - 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' स्वाधीनता प्राप्ति के लिए आजीवन संघर्ष करनेवाले तथा अपने प्राणों का भी बलिदान देनेवाले क्रांतिकारियों के देशप्रेम को आधुनिक पीढ़ी के सम्मुख रखना। सुभाषबाबू के जीवन संबंधी लोगों के मन में जो गलतफहमियाँ थी या संदेह था उसे मिटाने का प्रयास करना।

5.7 निष्कर्ष :

विवेच्य उपन्यासों का औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेचन-विश्लेषण करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि दोनों उपन्यासकारों की रचनाओं में कुछ साम्य तथा कुछ वैषम्य प्राप्त होते हैं।

5.7.1 साम्य -

विवेच्य उपन्यासों में जो साम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. विवेच्य दोनों रचनाकारों ने अपनी औपन्यासिक कला में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल-वातावरण, भाषा-शैली तथा उद्‌देश्य आदि तत्वों का प्रयोग किया है।
2. विवेच्य रचनाओं में आजादी के संघर्ष पुरूष महानायकों का चित्रण प्राप्त होता है। साथ ही इन पात्रों के चरित्र-चित्रण में रचनाकार सफल हुए हैं।

3. विवेच्य रचनाओं में संक्षिप्त, रोचक, अँग्रेजी भाषा से युक्त संवादों का प्रयोग मिलता है। साथ ही इन संवादों में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होता है।
4. विवेच्य उपन्यासों में अरबी, फारसी, संस्कृत तथा अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है।
5. विवेच्य उपन्यासों में आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नात्मक एवं पत्रात्मक शैली का प्रयोग सफलता के साथ किया हुआ मिलता है।
6. दोनों रचनाकारों ने विवेच्य उपन्यासों में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों को अभिव्यक्ति दी है।

5.7.2 **वैषम्य -**

दोनों उपन्यासकारों के औपन्यासिक कला का अध्ययन करने के पश्चात जो वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में विश्वास पाटील के 'महानायक' की तुलना में वर्णनात्मकता अधिक दिखाई देती है।
2. गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में फ्लैशबैक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली, टेलिफोनिक शैली, प्रश्नात्मक शैली, स्वप्न शैली तथा किस्सागोई शैली आदि शैलियों का प्रयोग मिलता है, जब की विश्वास पाटील के 'महानायक' में वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली तथा पत्रात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग दिखाई देता है।
3. 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में राजनीतिक परिवेश का चित्रण कम मिलता है बल्कि 'महानायक' उपन्यास में राजनीतिक परिवेश अपने विभिन्न तेवरों के साथ चित्रित हुआ है।

* * * *